आखिर वह घड़ी आई आज

31.10.2006 ***- ब्र. कु. सुदेश बहन***

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति या कहें ओम् आनन्द। ओम् आनन्द कहें तो परम आनन्द में परमपिता परमात्मा से मिलन मनाने की खुशी, न केवल मुख के बोल से परन्तु रोम-रोम से प्रकट होती है। आज अमृतवेले उठते ही पहला संकल्प यही था आखिर वह दिन आया आज जिस दिन का रास्ता तकते थे। जिस दिन कि बहुत समय से इन्तजार थी। मन में बार-बार संकल्प उठता था कितनी सुन्दर घड़ी है प्रभु से मिलन मनाने की। आखिर वह घड़ी आ गई। आज हम किनसे मिलन मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं? वैसे तो ये कहें कि दूर देश से बाबा से मिलने आये हैं। परदेश से बाबा से मिलने आये हैं, विदेश से बाबा से मिलने आये हैं। परन्तु सबसे दूर रहने वाला, परे ते परे देश में रहने वाला, परे ते परे परमात्मा बच्चों की चाह में आज हम बच्चों से मिलने आ रहे हैं। और हम भी उसी लगन से, निश्चय से, प्यार की लहरों में लहराते हुए मन ही मन आनन्द की लहरों में लहराते यही कह रहे हैं कि अभी मेरा बाबा आया कि आया। आपका दिल भी यही गा रहा है ना? बाबा भी आने के लिए इन्तजार कर रहा है क्योंकि हम सभी ने इन्तजाम कर लिया है।

तो आज किनसे मिलन मनाने की ये शुभ घड़ी आयी है? भगवान से हम मिलन मना रहे हैं। भगवान किनको मिलते हैं? भाग्यवान बच्चों को। इसलिए भाग्य बनाने वाले को भगवान कहा जाता है। पर भाग्य किनका बनता है? जो भाग-भाग कर भगवान के पास आते हैं। जिन्हें एक ही लगन है, एक ही निश्चय है, एक ही भावना है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। मैं बाबा की तो बाबा भी कहते बच्चे तुम मेरे हो। बाबा ने पहले कहा तुम मेरे हो। जिन आत्माओं को अपने पन का अनुभव हुआ बाबा से, वह फिर प्यार से कहते बाबा तुम मेरे हो। भक्ति में कहते भगवान के बहुत रूप है, भगवान बहुरूपीया है, अनेक रूप है। है तो एक ही ज्योती बिन्दु स्वरूप पर हम बच्चों ने वह जो है जैसा है उस मिलन के अनुभव से उनको अनेक रूपों से याद किया है। कभी-कभी बाबा कहते है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ इसको कोई बिरला ही पहचानता है। और बहुत बारी अपना परीचय मैं जो हुँ, जैसा हुँ देते है। तो आज का दिन फिर से आ गया है कि वह जो है, जैसा है उनसे मिलन मना के जो हमको चाहीये, जो दाता देने वाला देने के लिए आया है जैसे कल्प पहले हमने लिया था वैसे लेने के लिए उपस्थित हो गये हैं। तो बाबा को बाबा रूप से मिलेंगे या भगवान के रूप से मिलेंगे? किस रूप से हम बच्चे आज बाबा से मिलन मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं? जो है, कैसे मिलन मनाता है और कैसे हम उन सब स्वरूपों का अनुभव करेगें?

निराकार है, अव्यक्त है, ज्योति स्वरूप है, सर्वशक्तिवान है इस रूप में हमने भक्ति मार्ग में भी गायन किया, महिमा कि और उसे याद करते आये। तो वास्तव में याद का अर्थ क्या है? जो जीवन में अनुभव में आ जाये उसका याद कहा जाता है। गहरा अनुभव वाली चीज याद रहता है। आंखों से देखी हुई चीज, कानों से सुनी हुई चीज, सुंघी हुई चीज कुछ समय के बाद भुल जायेगी। कोई दुसरा सिमरण करायेगा, याद करायेगा फिर याद आ जायेगी। पर जीवन के अनुभव में कोई दुसरा याद कराने वाली बात नहीं है। जो कर्मेन्द्रियों से हमने अनुभव किया वह दुसरों के सहयोग से फिर याद किया जाता है। कोई याद कराये तो याद आ जाता है। परन्तु कौनसी याद निराली है, अनोखी है, अलौकिक है, अद्विितय है? वह है आत्मा का परमपिता परमात्मा से मिलन। अन्दर से अपना अनुभव कोई दुसरा याद कराये इसकी बात नहीं है। जो रस लिया हुआ है, जो आनन्द लिया हुआ है उस आनन्द को आत्मा स्वयं कभी भूलती नहीं है। भक्ति में भी याद भूली नहीं है परन्तु वह रियल रूप नहीं था। इसलिए तो याद कर रहे थे क्योंकि बाप ने जो संगमयुग पर

सम्मुख याद कराया था वह सम्मुख नहीं रहा इसलिए याद करना पड़ा। सम्मुख तो सुख लेने कि बात है ना। इसलिए जितना-जितना आत्म-स्थिति में स्थित होकर, अपने को आत्मा समझ आत्मीक गुणों का स्वरूप बन जैसे के साथ वैसा बन याद करेंगे तो सुख का अनुभव कर सकेंगे। बाबा हमारा बाप भी है तो माँ भी है। वह है तो निराकार परमपिता पर मिलता ऐसे है जैसे मां है।

ये बहुत अच्छा शब्द है बाबा। बाबा से मिलन मनाने के लिए बैठे हैं। गुजराती में मां को ***बा*** कहके बुलाते हैं। तो बा-बा अर्थात ये मां भी है और बाप भी है। तो वह निराकार उसका मां का रूप प्यार का रूप है इसलिए वह प्यार से इन्तजार करता है। मां इन्तजार करती है अपने बच्चों का अपने घर में कि बच्चे आकर मेरे गोद में समा जावें। जब ये अनुभव हो जाता है कि मेरा बाबा से सम्बन्ध मां का है तो ये मिलन का रस अनोखा है। प्यार में मां ये नहीं देखती कि बच्चा मैला है। बाहर खेलते-खेलत अगर कोई धूल लग भी गई तो भी मां अपने गोद में समा लेती है। अभी हम अपने को स्टूडेंट समझते हैं तो शर्म महशुस होती है। स्टूडेंट को बाबा जिम्मदारी दे देता है। तो मैले कपडे में भी अगर बच्चा आता है तो मां हाथ पकड़ करके गोद में बैठा करके दृष्टी से धूलाई करके, प्यार की लहरें देकर के नया कपडा दे देती है। तो बाबा भी हम बच्चों को हर समय जब हम आते हैं तो नई कॉन्सीयस देता है। नये पुरूषार्थ की विधि बताता है। नया ड्रेस पहनाते हैं। तो माँ का रूप का अनुभव है हम आत्माओं को इसलिए अपने अन्दर प्यार की लहरें लिए हुए बाबा से मिलने के लिए बैठे हैं। प्यार का स्वरूप बन कर बैठे हैं। तो ऐसे ही महशुस होगा जैसे बाबा माँ के रूप में नजर से निहाल कर रहा है। सत्गुरू के रूप के नजर से निहाल कुछ और है, मॉ के नजर का रूप कुछ और है। तो बाबा से मिलन मनाने के लिए मैं बालक बाबा के गोद में स्थूल गोद की तो बात नहीं है ना। उस प्यार को हमने स्वीकार किया तो पिता के हक के अधिकारी बन जाते हैं। इसलिए निराकार के रूप के साथ-साथ हम अव्यक्त बाप-दादा से मिलन मना रहे हैं। अव्यक्त अनुभव कराने के लिए साकार रूप में भी हम बच्चों से मिले और निराकार रूप में भी मिले। तो बिना माँ के बाप का मिलना नहीं होता है। बिना माँ के बच्चा भी कैसे बनेंगे?

बाबा का निराकार स्वरूप और साकार बाबा का अव्यक्त स्वरूप दोनों का रस हम आत्मायें निराकारी स्थिति में जब स्थित होते हैं तो अनुभव करते हैं। निराकार स्वरूप आत्मा भी अपने आकारी अव्यक्ति स्वरूप में अव्यक्त बाप-दादा से सूक्ष्म मिलन मनाती है। स्नेह कि गोद है, अधिकार की गोद है। तो हम बाबा से मिलने बैठे हैं, अधिकारी बन कर बैठे हैं। बाबा हम बच्चों को हमारा ही अधिकार देने के लिए आया हुआ है। इसलिए अभी भक्ति वाला मिलना नहीं है। जैसे कोई नये होते हैं तो वे भक्ति वाली भावना से मिलते हैं। यानी सूक्ष्म में भिखारी बन कर मिलते हैं। बाबा आप मेरे में शक्ति भर देना, मेरे में गुण भर देना, मेरा ये कमजोरी मिटा देना। मांगना क्यों? सूर्य के सामने बैठे हुए आप सूर्य से शक्ति मांगेगे क्या? सूर्य की तेज किरणें मांगने से तो किटाणु भष्म नहीं करती। मांगने से किचडा भष्म नहीं करती। सूर्य की शक्ति है किटाणुओं को भष्म करने की, रोशनी देने की, अन्धेरा मिटाने की, शक्ति भरने की। तो नशा भी रहे और निश्चय भी रहे कि किससे मैं मिल रही हूँ? ज्ञान सूर्य से मिलन मनाने के लिए बैठी हूँ और निश्चय है कि ये ज्ञान सूर्य चमकता है तो हम सितारे भी चमकने लग जाते हैं। वह सूर्य चढ़ता तो सितारे छिप जाते हैं। ज्ञान सूर्य आया हुआ है तो हमारा भाग्य सितारा चमक गया है। इसलिए भगवान के सामने आये हैं। भाग्य सितारा चमकाने वाला भगवान अभी हमारे सामने उपस्थित है। अगर अधिकारी बन कर बैठुंगी तो अपने आप वह शक्ति को खीचूँगी और अगर मंगता (भिखारी) बन कर बैठेगें तो थोडा तो मिल जायेगा, पर फिर खाली हो जायेगें शक्ति भरी नहीं। भिखारी को भले कितना भी दे दो लेकिन वह अधिकारी तो नहीं है ना। प्रॉपर्टी का मालिक तो नहीं बन जाता ना। जितनी मेहनत की उतना फल

मिल गया, परन्तु बच्चा तो हकदार है। और बच्चे के लिए माँ-बाप को अन्दर से संकल्प अर्थात फूरना रहता है कि मेरा बच्चा लायक बन कर मेरे प्रॉपर्टी का मालीक बनें।

तो किस सम्बन्ध से मैं मिलन मनाने आयी हूँ? भक्ति वाली भावना से या समझ और सम्बन्ध से मिलन मना रही हूँ? इसलिए सम्बन्ध का सुख हम संगमयुग पर ब्राह्मण ही अनुभव कर पाते हैं। इस मिलन के आधार से हम बच्चों को सर्व प्राप्तियां वह भी अविनाशी हो जाती है। अखुट खजाना भर जाता है। बाबा हम बच्चों को श्रृंगार करने, वर्से का हकदार बनाने, लायक बनाने के लिए आते हैं। जो बाबा की प्रॉपर्टी है, जो बाबा हमको दे रहे हैं उसको ठिक तरह से युज करें। बाबा हमको तैयार करते हैं, हमारी बुद्धि सोने का बर्तन बनें ताकी रतन ठहर सके। बाबा के आने से पहले हम सभी योग में बैठते हैं। आप सभी दो घण्टा पहले ही आकर बैठ जाते हैं, इसका भाव क्या है? सिर्फ जगह लेने के लिए नहीं, अच्छी जगह मिले इसलिए नहीं। भावना तो है, और भी कुछ है? जैसे स्थूल में रहता की मैं बाबा के सामने बैठूँ वैसे ये भी रहे कि मैं ऐसा बनूँ जो बाबा को शक्ल दिखा सकूँ और बाबा मेरी शक्ल देख कर खुश हो जाये। तो ये तैयारी पहले से हम करते हैं कि अव्यक्त स्थिती में बैठ अव्यक्त वातावरण तैयार करें।

तीन तरह से हम बाबा से फायदा ले सकते हैं। एक है वायब्रेशन (vibration) से, दूसरा है विजन (vision) और तीसरा है गॉडली वर्सन्स् (Godly Versions)। वायब्रेशन जो है, जितना-जितना हम योग में बैठेगें तो उसमें आकर्षण पैदा होता है। उस वायब्रेशन से ये जो प्रकृति शरीर है वह भी तैयार हो रही है। वायब्रेशन शरीर भी ऑब्जर्व (observe) करती है। बुद्धि तो वायब्रेशन कैच करता है परन्तु प्रकृति पर भी वायब्रेशन का प्रभाव पड़ता है। हम अभी याद में बैठे हैं। शान्ति का वायब्रेशन है। शान्ति के सागर को बुला रहे हैं। बाबा शान्ति का सागर, शान्ति का भण्डार हमें शान्ति देने के लिए आते है। तो एक दृष्टि से ही फिलींग आती है कि शान्ति का सागर, प्रेम का सागर आ गया। परन्तु पहले से ही वह लहरों में लहराते हैं। सागर में कोई लिमिट नहीं है, अपने आप में उत्साह चाहिए तैरने का। तो वायब्रेशन क्रियेट करने मे जितनी-जितनी हमारे अन्दर अपनी आत्मिक स्थिति है, जितनी-जितनी अन्दर से प्यार उत्पन्न हो रही है उसी आधार से हम उसी लगन से हम बाबा के सामने बैठे हैं। इस पॉवरफुल एट्मोसफियर (Powerful Atmosphere) में अगर हमने अपने आप को ऑब्जर्ब (observe) कर लिया तो बाबा की दृष्टि इंजेक्शन का काम करती है। साइलेंस में बैठे हैं, देह भान भूल कर बैठे हैं तो बाबा की दृष्टि पडते ही जैसे कोई इंजेक्शन लग गया। इंजेक्शन लगा फिर शक्ति अन्दर अपने आप ही काम करती रहती है। गुप्त ही गुप्त वह शक्ति काम करती रहती है।

ज्ञान सूर्य कि किरणें चाहे मैं किसी भी कोने में बैठा हूँ वह किरणें मेरे पास पहुँचेगी जरूर। जितना मुझ आत्मा को चाहिए बाबा जानता है। आत्मा की झोली भरपुर जरूर होगी। कोई से भी कम्पेयर (compare) नहीं करना है। ये तो कम्पलीट (complite) होने की बात है। बाबा हम बच्चों को सम्पन्न बनाने के लिए आये हैं। मुझ आत्मा को समर्थी बनाने के लिए आया है और मैं आत्मा सर्व समर्थ हूँ क्योंकि मैं सर्व शक्तिवान की सन्तान हूँ। तो एक सेकण्ड की दृष्टि भी इंजेक्शन का काम करेगी। डॉक्टर जानता है कि इसको इंजेक्शन की जरूरत है या ऑपरेशन की जरूरत है या ज्यादा टाईम की जरूरत है। जो आपको चाहीए वह बाबा देगा जरूर। भाव ये है कि कम्पेरीजन करने से अपनी कमाई में घाटा पड़ जाता है। जो मिलना चाहिए ना, जो देख करके, सुन करके, समाना चाहिए ना उसमें ब्लाकेज (blockage) पड जाता है।

बाबा हम आत्माओं में शक्ति भर रहे हैं। ये सूक्ष्म शक्ति है इसमें हर एक आत्मा की अनुभूती अपनी-अपनी है। बाबा ने दिव्य बुद्धि से अन्दर का ताला खोला, वह गहन अनुभूति से अन्दर शक्ति आ जाती है। कईयों को यहाँ शक्ति की महशुषता नहीं होती है परन्तु यहाँ से जाने के बाद जब कोई परिस्थिती आति है, कोई समस्या आति है उसको कैसे हल कर लिया, तब शक्ति कि महशुषता होती है। शक्ति ही नहीं परन्तु सर्वशक्तिवान बाबा ही साथ चला जाता है। सर्व प्रकार की शक्तियां बाबा दे देता है। यहाँ शक्ति की यूज करने की जरूरत नहीं है इसलिए महशुष नहीं होता है। बैंक में बाबा ने जमा कर दिया, वहाँ जाकर कैस करेंगे। अब बैंक में ट्रांसफर होता तो हाथ में तो कुछ दिखाई नहीं पडता। तो कोई-कोई अपने में ही डाउँट करते हैं कि मैं बाबा से मिलके तो आया, पहले अच्छा अनुभव करता था परन्तु अभी तो कुछ हुआ नहीं। तो इस डाऊट में नहीं देखना। जाकर बैक में देखना कि बाबा ने कितना जमा कर दिया है। रॉयल घर के दिखावा नहीं करते। बाबा से भी हम दहेज लेने आये हैं। गुप्त पेटी में डालकर बाबा चाबी दे देता है हाथ में। इसलिए कभी भी कम्पेरीजन नहीं करना है। हर एक आत्मा का लेने का तरीका अपना-अपना है। अनुभूती अपनी-अपनी है। बाबा कोई कमी नहीं करता है तो मैं अपने में कमी क्यों करूँ।

ईश्वर सभी की इच्छाओं को पुरा करता है परन्तु मुझे इच्छा नही रखनी है। भगवान ने भाग्य बनाया, हम भगवान के बच्चे भाग्यवान है तभी तो मिलने का मौका मिला है, तब तो आने का चांस मिला है। इच्छा भी उनकी पूरी होती है बाबा कहते जो सतोगुणी, सतोप्रधान संस्कार वाली है। ईश्वरीय इच्छा, पॉजीटीव कामनायें पुरी होती जरूर है। परन्तु इच्छा मात्रम् अविद्या बनने वालों की ही इच्छा पुरी होती है ये गॉडली लॉ है। मुझे क्या चाहिए यह बाबा को मालुम है और वह अपने आप सब कुछ भर देगा। इसलिए सेकण्ड कि दृष्टि आत्मा को निहाल कर देती है, शक्ति भर देती है। बाबा बच्चों के सामने आयें और बात नहीं करें ता मुलाकात कि फिलींग कैसे आयेगी? मुलाकात कि फिलींग आती है बात-चित से, इसलिए भगवान के बोल मशहुर है। उस महावाक्यों को सुन करके, अपने में धारण करके फिर हमें दूसरों को सुनाना है कि भगवान ने क्या बोला है। हमारा प्रैक्टिकल जीवन वह बोलता रहे। बाबा के महावाक्य हमारे जीवन को महान बनाने वाले हैं। इसलिए बाबा सुन्दर धारणाओं की बातें सुनाते हैं, ध्यान खिंचवाते हैं, संस्कार परिवर्तन की बातें सुनाते हैं। एक-दो के साथ स्नेह-सम्बन्ध में कैसे रहना है वह व्यवहार की बात सुनाते हैं क्योंकि वह फिर हमको वहाँ प्रेक्टिकल में लाना है। हम दूसरों के साथ सेयर कर सकेंगे। फिर ये एक-दो को मदद कर सकता है। इसमें भले कम्पेयर करें। कौनसी पॉईन्ट आपको अच्छी लगी वह मेरे ध्यान में नहीं आई फिर वह लिखत में हमको मिली। फिर चांस है पढ़ने का आपस में रूह रिहान करने का। फिर वह वरदान बन जाता है।

बाबा के महावाक्य ही वरदान है। रोज मुरली में हम वरदान पढ़ते हैं ना। तो जो अव्यक्त बाबा ने, साकार बाबा ने हमको प्रेक्टिकल प्रेरणायें दी, शिक्षायें दी, शक्ति भरी और उसको जीवन में उतारने की विधि बताई उस विधि को विधिपूर्वक जीवन में लाने वालों के लिए वह वरदान है। तो बाबा वरदान देन के लिए आ रहे हैं, वरदानों से झोली भरने के लिए आ रहे हैं। ऐसा नहीं कि बाबा इन से बात कर रहे हैं मेरे से नहीं, हम सब से एक ही समय पर बाबा मिलते हैं। यही परमात्म शक्ति है जो लाखों-करोडों को एक ही समय पर एक साथ वरदान मिल जाता है। तो सतगुरू से भी मिलन मना रहे हैं और वरदानों से झोली भी भर रहे हैं। इन तीनों के वायब्रेशन को अपने में अनुभव करें। यह है आत्म अभिमानी की प्रैक्टिस। आत्मिक स्थिति में हम अभी जितना-जितना बैठेगें तो आत्मा ही तो बाबा से मिलन मनायेगी। मिलन की सुख का, जो अन्दर डीप गहराई का अनुभव वह आत्मा ही तो साथ लेकर जायेगी ना। इसलिए आते ही जैसे बाबा याद कराते हमको, याद होते भी जो याद भूल गई थी अपनी घर की याद भूल गई थी क्योंकि और-और

बातों का प्रभाव पड़ गया था। तो और कोई का वायब्रेशन मेरे को टच ना करे। किसी के वायब्रेशन को अगर मैंने अपने पास रख लिया तो वह ब्लॉकेज बन जायेगा। इसलिए अशरीरी होकर एकदम आत्मा जैसे परमधाम में बैठी है। परमधाम में ना और कोई स्मृती है, ना कोई हिसाब-किताब है ना किसी प्रकार का संस्कार काम कर रहा है।

तो ये शान्ति का वायब्रेशन हम क्रियेट कर रहे हैं तो वह मेग्नेट (बाबा) हमको अपने तरफ खिंच लेगा। शान्तिधाम वाला बाबा, अव्यक्त वतन वाला बाबा दोनों शक्ति हमको इस शरीर कि स्थिति से पार अपने पास बैठा लेगा। सुई को जंक नहीं है तो मैग्नेट खिंच लेता है। मैग्नेट खिंचता है या सूई खिंचती है? एट्रेक्शन तो दोनों में है। इसलिए तैयारी कर रहे हैं कि कोई प्रकार का डस्ट ना हो, कोई प्रकार का रस्ट ना हो। किसी प्रकार का कोई इन्फ्लूएन्स अपनी ही विचारो का, संस्कारों का, व्यवहारों का ना रहे। विश्व कल्याणकारी बाबा हम बच्चों को जो अपनी शक्तियां है, जो अपने गुण है, जो बाबा के खजाने हैं उनसे भरपूर करने के लिए आ रहे हैं। तो मैं तैयार रहूँ। बाबा विमान लेकर के आ रहे हैं तो मैं ऐसे ही उस स्नेह कि विमान पर विराजमान होकर के फरिस्ता बन करके बाबा के साथ मिलन मनाऊँ। कोई भी सम्बन्ध से जिस आत्मा ने मिलन का रस ले लिया वह बहुत समय तक फिर काम आता रहता। बाबा हमारा सखा भी है। मित्र मिलने के लिए आ रहा है। परम मित्र है। परमपिता भी है, परम शिक्षक भी है तो परम मित्र भी है। वह मित्रता निभाता है। हमारे दिल का कोई भी किसी भी प्रकार का दर्द है, कोई भी पीड़ा है, दिल में कोई दुःख है वह पी लेता है, खत्म कर देता है। ऐसा भी नहीं कि मुझे दिल का हाल सुनाना है नहीं, दिलवर दिल का हाल जानता है। हाँ मैं सिर्फ दिल खोलकर बैठूँ। अभी दुःख दर्द को याद नहीं करना है, बस एक दम दिल खोल कर बैठना है। तो वह जो दिलवर की दिल की भावनायें हमारे प्रति है वह भर जायेंगें, दुसरों की भावनायें खत्म हो जायेंगे। दुसरों के जो भाव-स्वभाव से हमारे अन्दर जो थोडी ठेस पहुँची थी वह ठीक हो जायेगी। तो दिल खुश मिठाई खिलाने के लिए बाबा आ रहा है। दिलाराम बाबा से दिल की रूह-रिहान करने के लिए हम यहां बैठे हैं। तो किसी भी रूप से बाबा से मिलन मनाओ परन्तु कुछ भी एक्सपेक्टेशन (इच्छा) ना हो। सबसे बडा सिक्रेट है कि कोई भी एक्सपेक्टेशन ना रखो। कोई भी एक्सपेक्टेशन रखी तो वह ब्लॉकेज बन जायेगा। किसी बात में भारी बन गये ना तो फिर जैसे पत्थर को कितना भी दिन पानी में रखो पर क्या उसमें पानी भरेगा? बाबा भले किन्तना ही दृष्टि देता रहे, कैसा भी बोल बोलता रहे अन्दर चट नहीं होगा। सॉफ्ट है तो एक बारी पानी में डालो और निकालो, ऑब्जर्ब कर लेता है। इसलिए हेवी हर्ट (Heavy Heart) से नहीं लाईट हर्ट (Light Heart) से हैपी हर्ट (Happy Heart) से हैपी मिलन मनाने के लिए बाबा के पास बैठे हैं। तो ऐसे भाग्यवान बच्चों को पहले से ही भगवान से मिलन मनाने की, ईश्वरीय सुख की अनुभव करने की, दिव्य बुद्धि दाता से दिव्य बुद्धि का वरदान लेने की, नजर से निहाल होने कि मुबारक हो।

-: ओम् शान्ति :-